झाँसी की रानी

क्र. ५३९ | रु. १०

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके - अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज़्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १००० + पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : **www.ack-media.com.** अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर **www.amarchitrakatha.com** से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को पांच वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दूरदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा
माला सिंह

चित्र
हेमा जोशी

संपादक
अनंत पै

मुखपृष्ठ
प्रताप मुलिक

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-268-7
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor,
Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri - 400059, India.
Printed at Zirius Images Pvt. Ltd, Bhiwandi, Thane - 421 311.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com

झाँसी की रानी
राज्य- निष्कासित पेशवा बाजीराव द्वितीय सपरिवार बिठूर में रहते थे। उनके दरबारी मोरोपंत की मणिकर्णिका नाम की एक बेटी थी।

दुलार से उसे सब मनु कह कर पुकारते थे, और उसे लिखना-पढ़ना प्रिय था।
मनु को कहीं देखा?
वह लड़कों के साथ बैठी पढ़ रही है।
स्त्रियों के लिए पढ़ाई-लिखाई किस काम की?
मगर मनु तो रानी बनेगी!

धीरे-धीरे मनु ग्यारह वर्ष की हो गयी।
मनु बड़ी हो गयी है। अब उसके लिए वर ढूँढ़ना चाहिए।
ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की है कि उसका वर राजकुल का होगा!

तुमने खबर सुनी? हमारी मनु का विवाह झाँसी के महाराजा से होगा!
और धन एवं विजय की देवी लक्ष्मी के प्रति भक्तिस्वरूप उसका नाम रखा जायेगा लक्ष्मीबाई!
यों एक वर्ष और बीत गया।

विवाह बड़ी धूम-धाम और...
...समारोहपूर्वक मई १८४२ को संपन्न हुआ।
१८५१ में लक्ष्मीबाई ने एक पुत्र को जन्म दिया।
झाँसी के लिए यह बड़ी खुशी का दिन है।
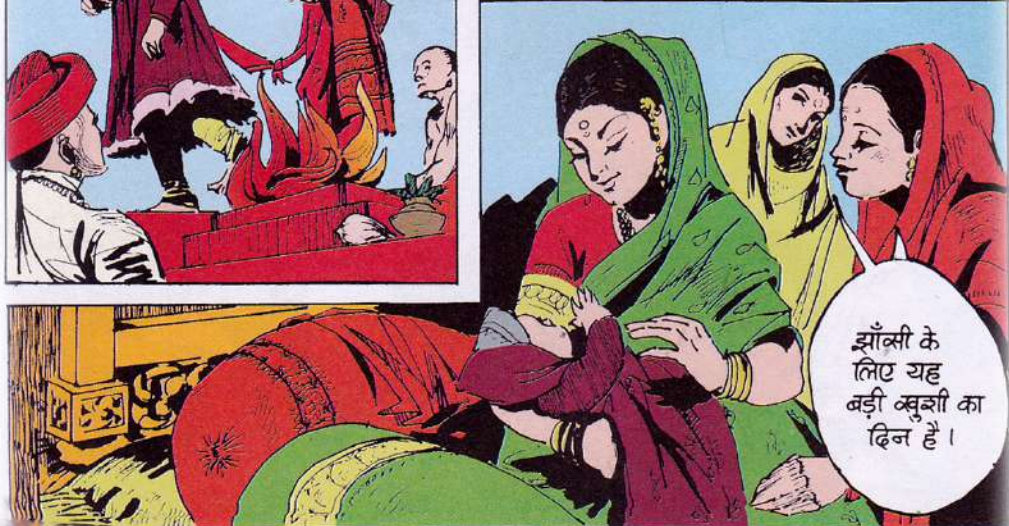
मगर तीन महीने बाद ही शिशु की मृत्यु हो गयी।
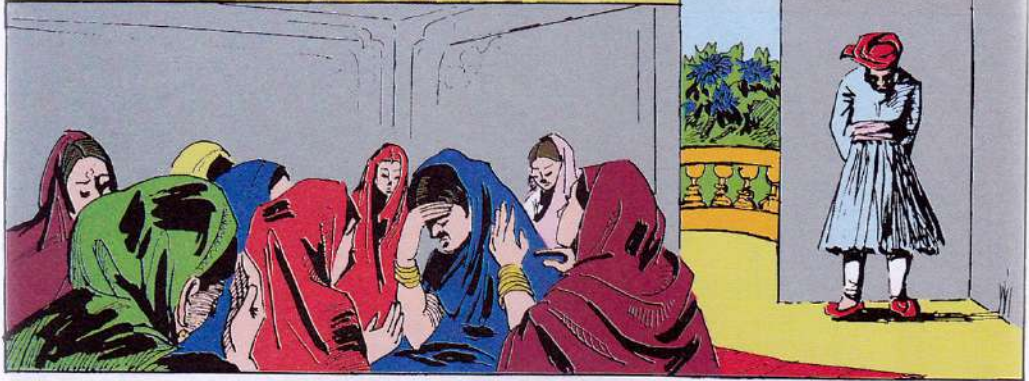
महाराजा शोक और निराशा में डूब गये।
अफसोस! मेरा कोई बेटा नहीं, जो मेरा उत्तराधिकारी बने। क्या करूँ?

महाराजा मृत्यु शैया पर हैं!
झाँसी का क्या होगा?
महाराजा एक बेटा गोद लेने वाले हैं।

१९ नवंबर, १८५३ को पुत्र गोद लिया गया।
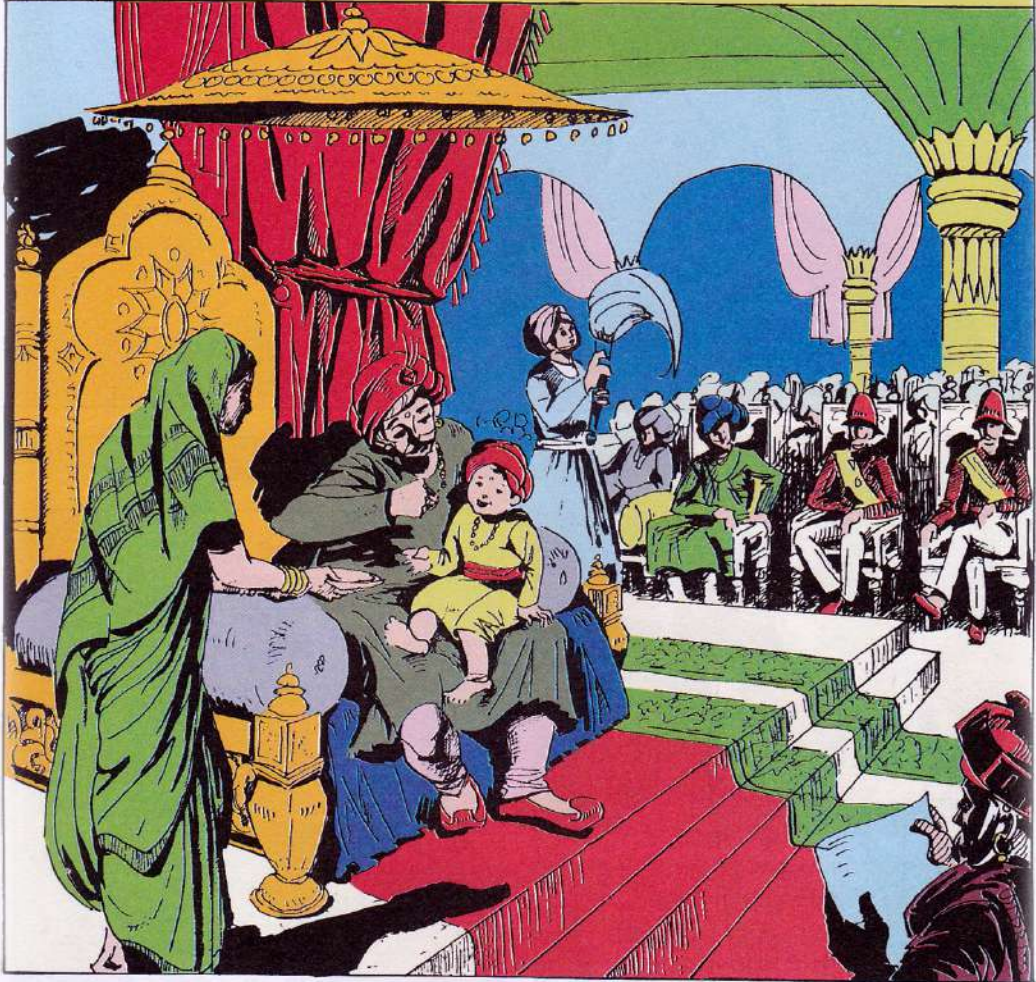
अतः रानी लक्ष्मीबाई ने अपने को कुशल राज्य संचालन के लिए अर्पित कर दिया।

मगर गवर्नर-जनरल ने प्रतिवेदन ठुकरा दिया।
ब्रिटिश सरकार ने झाँसी को अपने अधिकार में लेने का फैसला किया है।
मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी!

झाँसी के लिए यह शोक मनाने का दिन था।
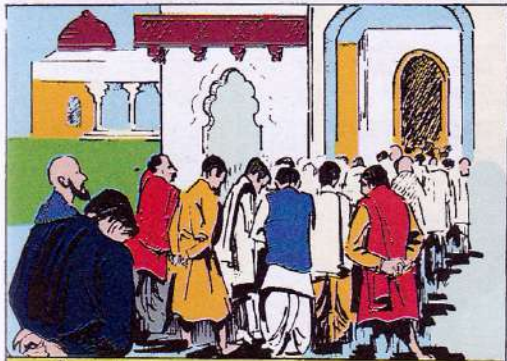
जनता के पूर्ण समर्थन ने लक्ष्मीबाई में नया साहस जगा दिया।
झाँसी की रानी आँसू बहाने के लिए नहीं जनमी! दूत भेज कर मैं लंदन में अपील करूँगी!

मगर –
ब्रिटिश सरकार ने आपकी अपील ठुकरा दी है!
अंग्रेज अन्यायी हैं। मैं उनकी अवज्ञा करूँगी।

अंग्रेजों की लोकप्रियता लगातार घट रही थी।
उन्होंने अन्यायपूर्वक सातारा को अपने अधिकार में ले लिया है।
घटिया इंग्लिस्तानी कपड़े ने हमारा हाथकरघा उद्योग बरबाद कर दिया है।
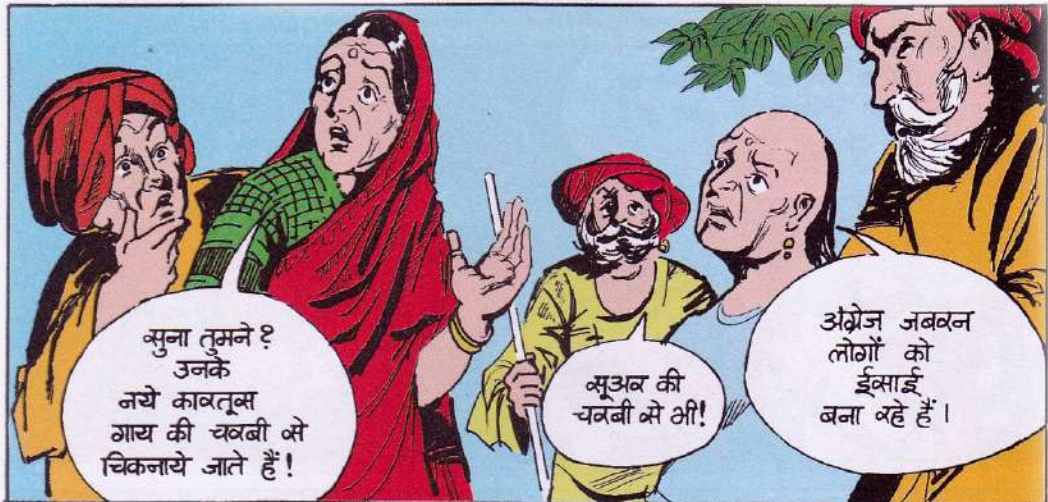
१० मई, १८५७ को मेरठ छावनी के सैनिकों ने खुला विद्रोह कर दिया। उन्होंने अपने अफसरों पर गोलियाँ चलायीं और अपने बंदी साथियों को मुक्त कर दिया।

इसके बाद वे दिल्ली पहुँचे। वहाँ उनका भव्य स्वागत हुआ।

उन्होंने भूतपूर्व वयोवृद्ध बादशाह, बहादुरशाह जफर को पुनः मुगल-सिंहासन पर बैठाया। दिल्ली में राष्ट्रवादी सैनिकों का मुख्यालय बन गया।
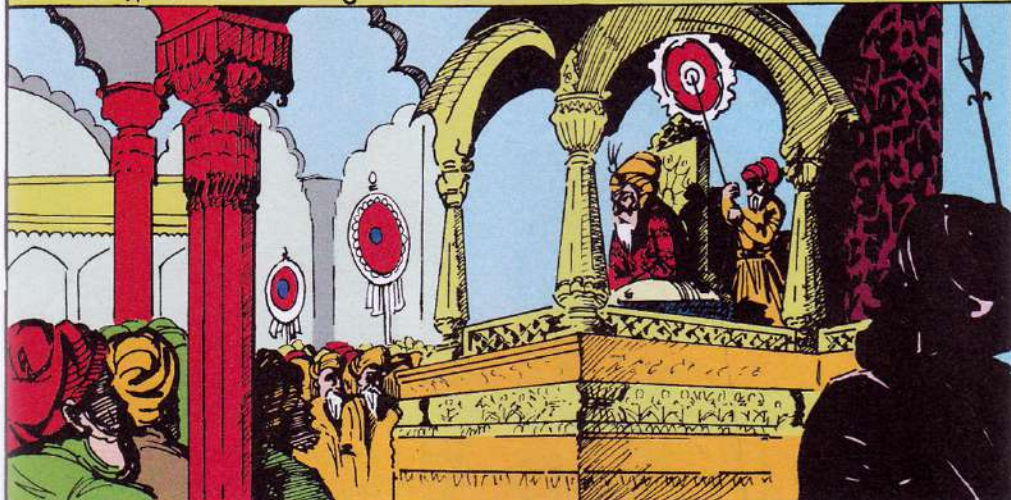
अंग्रेज लक्ष्मीबाई के पास दौड़े आये और उससे सहायता माँगी।
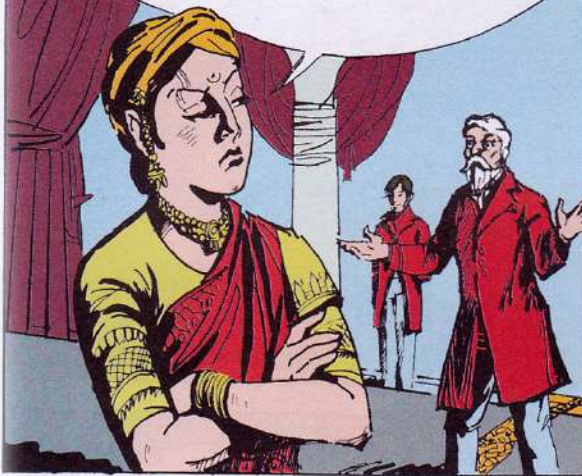
राष्ट्रवादी सैनिकों के मुकाबले अंग्रेज नितांत शक्तिहीन साबित हुए और उनके पैर पूरी तरह उखड़ गये।

मगर रानी लक्ष्मीबाई ने जनता के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन बुलाया।
मैं चाहती हूँ, यह फैसला जनता करे कि झाँसी पर राज्य कौन करे!
फिलहाल रानी साहिबा ही बागडोर संभालें।

झाँसी पर सदा के लिए रानी का राज्य रहेगा!
हम रानी की वफादार प्रजा हैं!

महल के बाहर विशाल जन-समुदाय उत्सुकता से अपने प्रतिनिधियों के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था।
झाँसी स्वतंत्र राज्य होगा, और लक्ष्मीबाई उस पर राज करेंगी।
लक्ष्मीबाई! जिन्दाबाद!!
रानी झाँसी की जय!

लक्ष्मीबाई कला और साहित्य की महान संरक्षिका थीं।

राजकीय पुस्तकालय में लक्ष्मीबाई की विशेष रुचि थी।

लक्ष्मीबाई की सत्ता को पहली चुनौती स्वर्गीय महाराजा के एक दूर के भतीजे सदाशिव राव ने दी।

मैं झाँसी का राजा हूँ !

हमारी शासक रानी हैं।
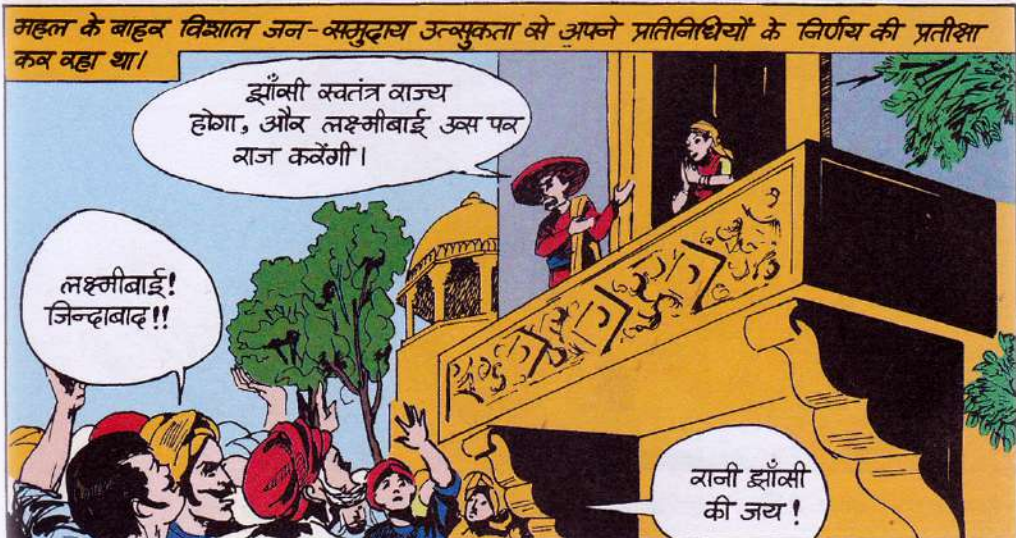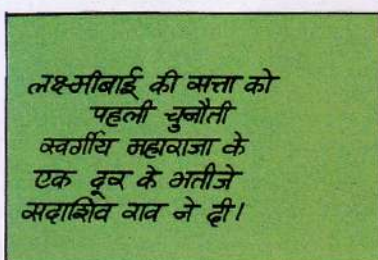
लक्ष्मीबाई ने सेना भेजी। सदाशिव राव को एक ही मुठभेड़ में मुँह की खानी पड़ी।

दतिया और ओरछा नामक पड़ोसी राज्यों के राजाओं ने भी झाँसी को लक्ष्मीबाई से छीनना चाहा। मगर उन्हें भी पराजय का मुँह देखना पड़ा।
ओरछा के सैनिक आ रहे हैं!
उन्हें भी अपनी शक्ति भर कर लेने दो! झाँसी हमसे न ले पायेंगे!
हमें अपने सैनिक व्यर्थ नहीं गँवाने। शत्रु निकट आ जाय तभी हम आक्रमण करेंगे।

झाँसी के सैनिक गोलियाँ नहीं चला रहे। आगे बढ़ कर हम किला फतह कर लें!

धायं!
धयं!
लक्ष्मीबाई के सैनिकों ने गोले-गोलियाँ बरसानी शुरू कीं तो आक्रमणकारी घबड़ा कर पीछे हट गये।

ओरछा के सैनिकों ने चुपके-से चार तोपें अंधेरे में छिपा दीं, और फिर झाँसी की सेना पर भीषण धावा बोल दिया।
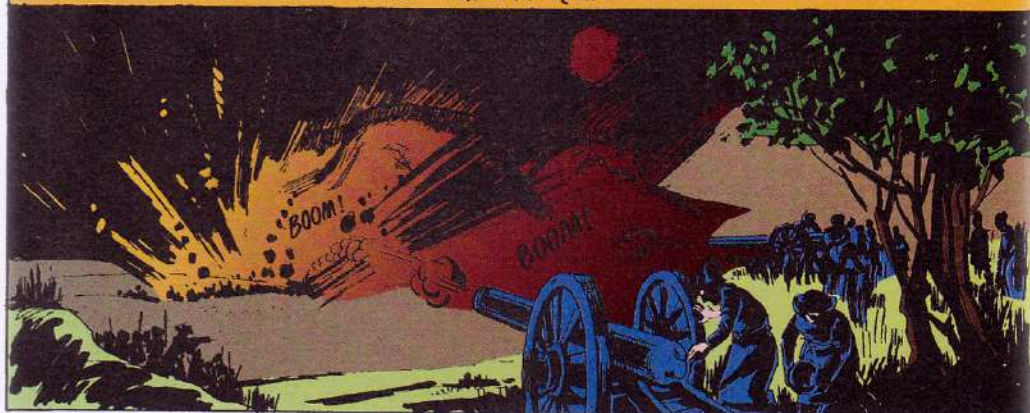
रानी द्वारा साहस बंधाने पर झाँसी के सैनिकों ने शत्रु को खदेड़ दिया।

विजय-पर्व मनाने के लिए रानी ने विराट दरबार आयोजित किया।
मुझे अपने जवानों पर गर्व है। तुम लोग बहादुर और निडर हो!

मगर दिल्ली से एक बुरी खबर आयी।
बादशाह का क्या हुआ?
अंग्रेजों ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया है।
उसके बेटे निर्दयतापूर्वक गोलियों से उड़ा दिये गये। वह खुद कैद में है।

नाना साहब की सेना हार गयी। और कानपुर फिर छिन गया।
सारा अवध अंग्रेजों ने दोबारा जीत लिया है।
क्या अब झाँसी की बारी है?

लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजों के मुकाबले की तैयारियाँ शुरू कर दीं।

तब रानी ने जनता को सेना में भरती होने का आह्वान किया।

स्त्रियां भी सेना में भरती हुईं और उन्हें घुड़सवारी, गोलाबारी और घेराबंदी सिखायी गयी। उन्हें पहरेदारी और घायलों की परिचर्या के काम सौंपे गये।
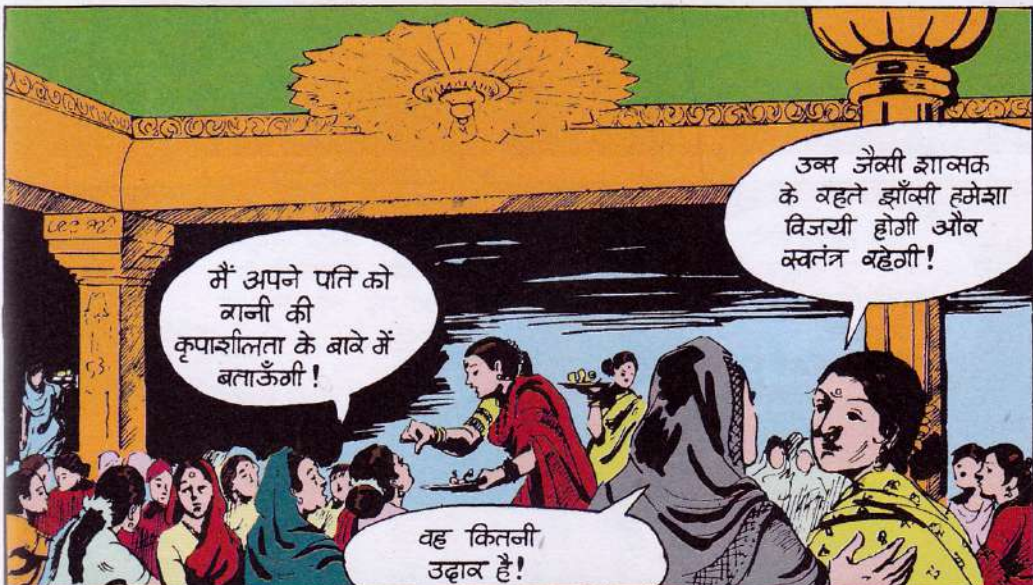
स्त्रियों में आत्मविश्वास पैदा करने के लिए लक्ष्मीबाई ने हल्दी-कुमकुम समारोह आयोजित किया

अंग्रेजों ने सिहोर और राहतगढ़ ले लिये हैं!
सागर भी ले लिया!

उन्होंने हमारे सहयोगी बाणपुर के राजा को हरा दिया है!
कुछ ही हफ़्तों में वे हमारे दरवाजों पर होंगे!

इस बीच, ब्रिटिश कैंप में –
झाँसी की रानी को कम न आँकना! विद्रोही पक्ष में वह सबसे बढ़ कर है।
चंदेरी का किला जीत लेने के बाद, अब झाँसी अपने हाथ में ही समझो!

आप तात्या टोपे और राव साहब जैसे पुराने मित्रों से सहायता क्यों नहीं माँगतीं?
माँगी है। तात्या टोपे तो अंग्रेजों के कट्टर सहयोगी पन्ना और चरखारी के राजाओं पर आक्रमण भी कर चुके हैं।

लक्ष्मीबाई ने जनता के प्रतिनिधियों की एक सभा की और पूछा कि वे मुकाबला करना चाहते हैं या संधि।

२५ मार्च, १८५८ को सुबह-ही-सुबह अंग्रेजों की तोपें झाँसी पर गोले बरसाने लगीं। लक्ष्मीबाई के तोपचियों ने हर गोले का जवाब गोले से दिया।
ठायं!
ठायं!
धम्म!
धायं!
४ दिनों तक अंग्रेजों की तोपें रात-दिन, गोलाबारी करती रहीं। मगर परिणाम निराशाजनक रहा।
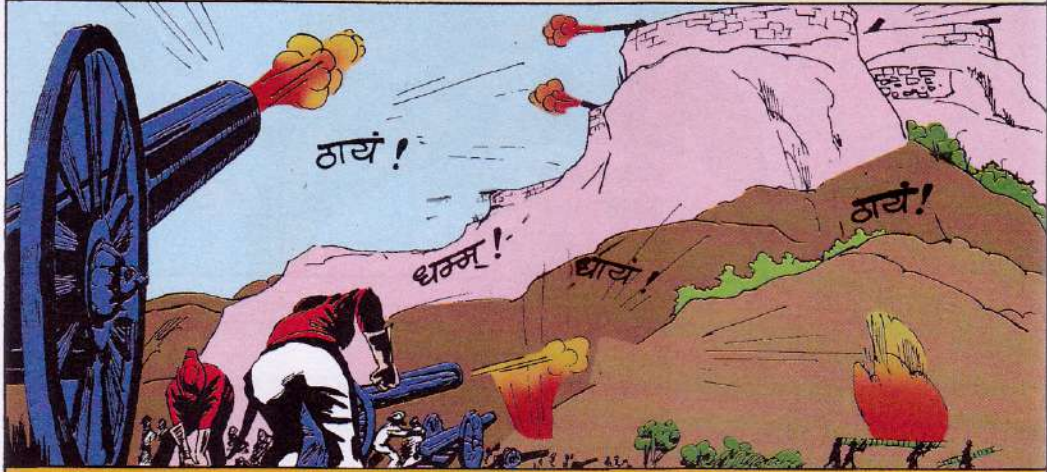
तब क़िले की एक दीवार और बुर्ज को थोड़ी-सी क्षति पहुँची।
आओ, जल्दी से दरार भरें!
हम जीते-जी विदेशी को घुसने न देंगे!

वो देखो, तात्या टोपे हमारी सहायता को आ रहा है!
हम बच गये!

तात्या टोपे ही है!
कैसी मंगल-ज्योति प्रज्ज्वलित की है उन्होंने!
अंग्रेज झाँसी पर कभी शासन न कर सकेंगे।

रात को अंग्रेजों ने दो २४ पौंड की तोपें मंगवायीं और तात्या की सेना पर गोले बरसाने लगे।

... और अगले दिन अंग्रेजों ने तात्या की सेना को एक ही हल्ले में साफ कर दिया।

३ अप्रैल, १८५८ को–

देखो,
हमें वहाँ से
ऊपर चढ़ना है!

रानी के पक्ष के हमारे भेदिये ने
अपना वचन पूरा किया!
उसे अच्छी
खासी रकम मिली!

अंग्रेज
आ गये!
आने दो!
हम उन्हें बता देंगे
कि झाँसी के मरदाने
कैसे लड़ते हैं!

अंग्रेज
किले में
घुस आये!

अब कोई आशा नहीं बची!
क्या समर्पण
कर दूँ?
हरगिज
नहीं!

और लक्ष्मीबाई अपनी सेना का नेतृत्व करती हुई अंग्रेजों
पर टूट पड़ी।
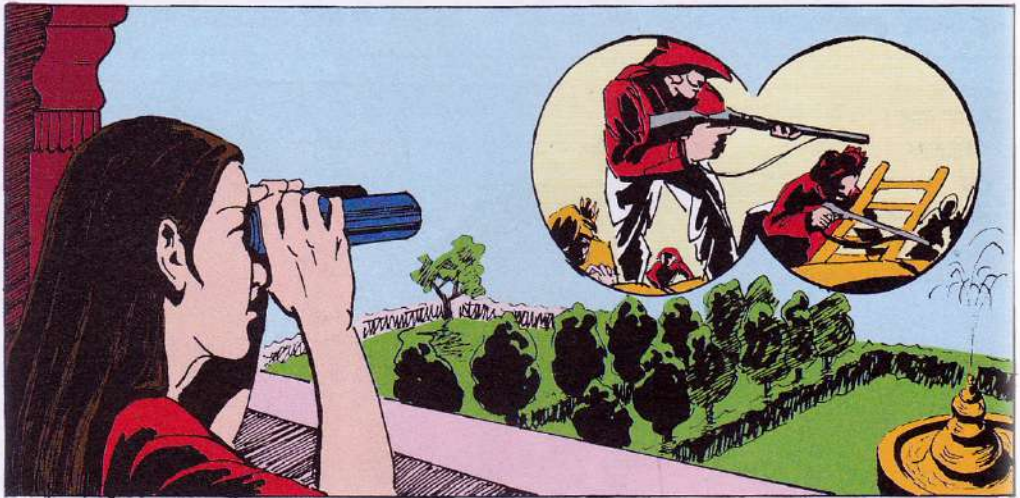
यह जवाबी हमला इतना अचानक और भयंकर था कि अंग्रेज भाग कर छिपने पर मजबूर हो गये।

आधी रात को–

झाँसी की रानी बच निकली!
चलो, उसका पीछा करें!
हम उसे पकड़ न सकेंगे!
जिन दो सैनिकों ने उसे पकड़ने की कोशिश की थी उन्हें उसने मार डाला!

अंग्रेजों ने झाँसी को तबाह कर डाला!
राजकीय पुस्तकालय भी तहस-नहस कर डाला!

क्यों? आखिर झाँसी की जनता ने क्या अपराध किया है?
अंग्रेज कहते हैं कि वे शहर-भर को सबक सिखायेंगे, ताकि फिर कोई उन्हें चुनौती देने की हिम्मत न कर सके!
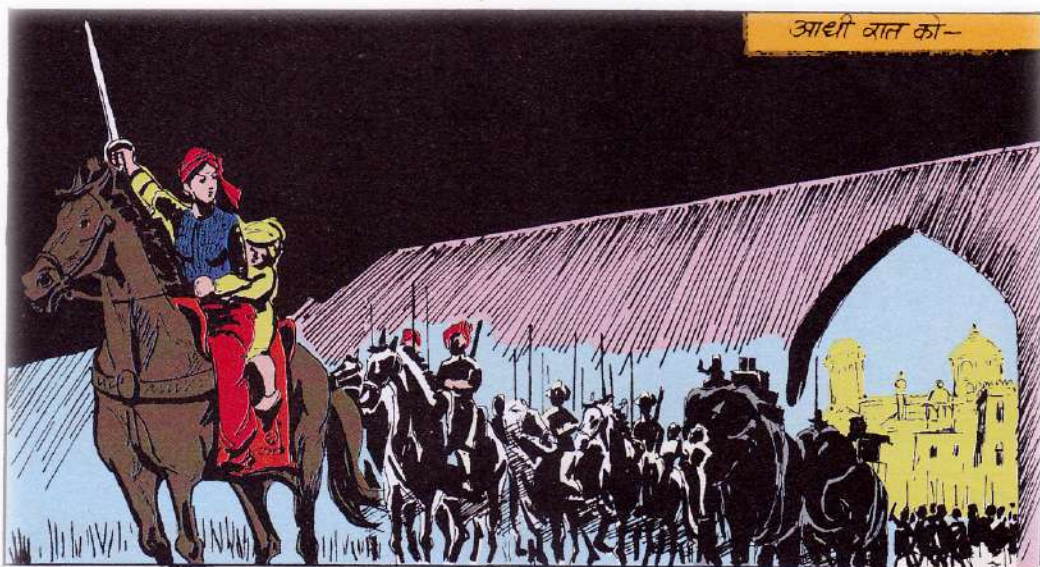
कालपी में लक्ष्मीबाई राव साहब के पड़ाव में पहुँची।
स्वागत है, वीरांगना! अपने संघर्ष में मुझे तुम्हारी सहायता चाहिये।
मराठों की शान की रक्षा करते हुए, रणभूमि में मरने से ज्यादा खुशी मुझे किसी चीज में नहीं मिलेगी।
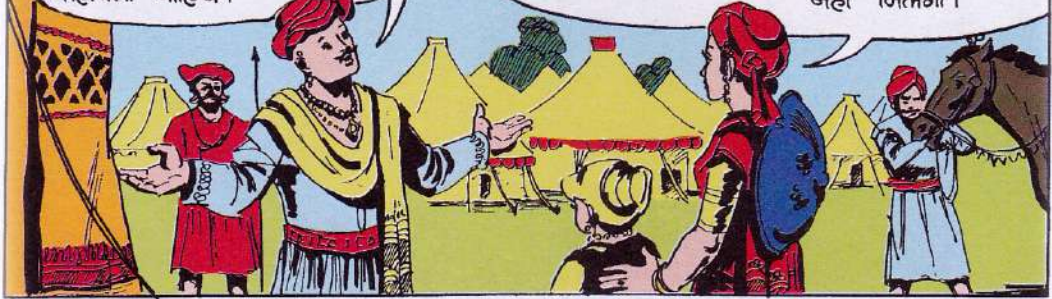
आप सेना का मुआयना कर लें।
सैनिकों में दृढ़ अनुशासन बहुत जरूरी है। हर रोज सुबह सैनिक-अभ्यास और कवायद होनी चाहिये!

अंग्रेज कालपी के गिर्द घेरा डालने की योजना बना रहे हैं।
क्यों न हम कूंच पहुँचकर उनसे दो दो हाथ करें।
अच्छा खयाल है। हम उनका खुले में मुकाबला

पिछली सैनिक पंक्ति बड़ी मज़बूत होनी चाहिये।
हम सभी युद्ध कला में प्रवीण हैं। आने दो अंग्रेजों को!

राष्ट्रवादी नेताओं ने पिछली सैनिक पंक्ति को शक्तिशाली रखने संबंधी लक्ष्मीबाई की राय पर अमल नहीं किया, और राव साहब की सेना बुरी तरह परास्त हो गयी।
सब समाप्त हो गया! हम भी भाग चलें!

अब कोई उम्मीद नहीं रही। हम समर्पण भी कर सकते हैं।
हम पूरी तरह पराजित हो गये हैं।
हिम्मत न छोड़िये। अभी-अभी बाँदा के नवाब दो हजार घुड़सवार,तोपें और पैदल सेना ले कर आये हैं।

आगे की कार्रवाई पर विचार करने के लिए राव साहब ने सभा बुलायी।
हमारी स्थिति हर क्षण बिगड़ती जा रही है। क्या करें?
आखिरी जवान रहने तक हम लड़ेंगे।
हमें आखिरी दम तक लड़ना चाहिये। अगर हम डट कर प्रतिरोध करें और हमारे सैनिक अनुशासन में रहें, तो हम अब भी अपनी इज्जत बचा सकते हैं।

मगर अंग्रेजों की चातुर्यपूर्ण रणनीति पुनः सफल हुई और राव साहब की सेना भाग खड़ी हुई।

अब लक्ष्मीबाई अपने घोड़े पर सवार हो कर शत्रु पर शेरनी की तरह टूट पड़ी।

इससे दूसरे नेता भी प्रेरित हुए और आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े।

बढ़ो, जीत हमारी है!

रानी का अनुसरण करो! शत्रु पीछे हट रहा है!

इस पर अंग्रेज सेना के कमांडर सर ह्यू रोज़ ने ऊँट- सवार टुकड़ी को हमला करने का आदेश दिया।

पेशवा सैनिक इस आक्रमण का मुकाबला न कर सके और घबड़ा कर पीछे हट गये।

विद्रोह की भावना अब बिलकुल खत्म हो चुकी थी। बिना और लड़ाई किये, २४ मई, १८५८ को अंग्रेजों ने कालपी के किले पर कब्जा कर लिया।

रानी को देखते ही, ग्वालियर की सेना ने हथियार डाल दिए!

इस प्रकार, विजय-ध्वनि के बीच राव साहब ने ग्वालियर में प्रवेश किया और एक विशाल दरबार आयोजित कर के स्वयं को मराठा राज्यसंघ का प्रधान घोषित किया।
राव साहब ने भारत की लाज रख ली।
पेशवा-कुल अमर रहे!!

समारोह जारी था, मगर लक्ष्मीबाई अधीर हो रही थी।
हमारे पास धन है, शस्त्र-सज्जित सेना है। हमें अगले युद्ध की तैयारी में जुट जाना चाहिये!
अभी बहुत समय है।
अंग्रेजों ने हमला शुरू कर दिया है!
और हमारी सेना तैयार नहीं है। आखिरी लड़ाई के लिए सैनिकों को मैदान में उतारिये। अपने कर्त्तव्य के लिए मैं तैयार हूँ। आप अपना कर्त्तव्य कीजिये। ईश्वर आपका भला करे!

शत्रु पर आक्रमण करने के लिए लक्ष्मीबाई पुरुष-वेश धारण कर आगे बढ़ी।

अंग्रेजों की कुमक भी आ गयी! सब कुछ नष्ट हो गया!
मैं हिम्मत न हारूँगी। कभी आत्म-समर्पण न करूँगी!

दोनों पक्ष जम कर लड़े।
बढ़ो! चलो!

यों भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की महानतम वीरांगना की जीवन-लीला समाप्त हो गयी!
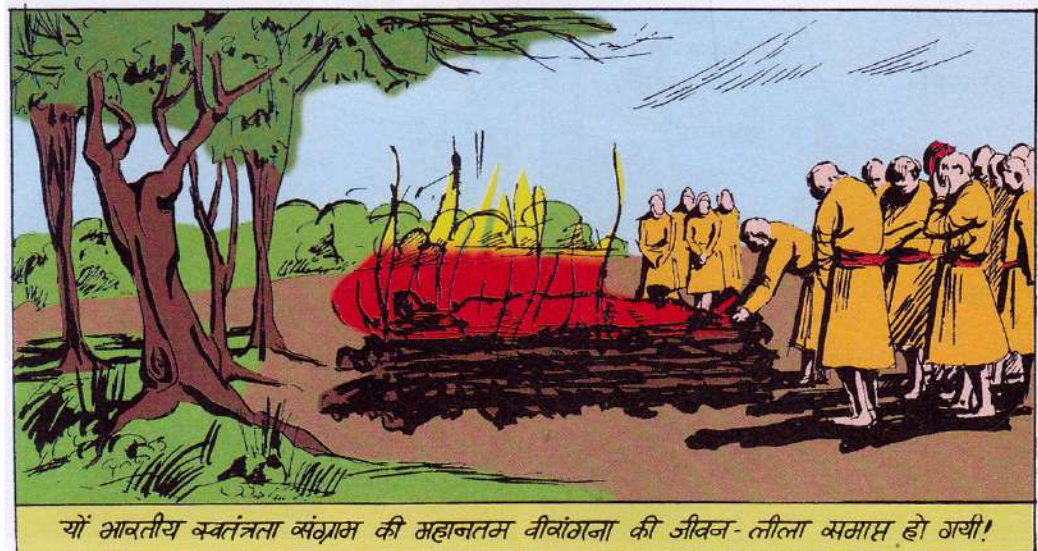
झाँसी की रानी

शासन तो वह एक छोटे से राज्य पर करती थी, परन्तु उनकी आंखों में पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र का स्वप्न था। १८५७ के विद्रोह में झांसी की रानी, लक्ष्मीबाई ने अंग्रेज सेना के एक से एक वीर सेनापतियों को लोहे के चने चबवा दिए थे। प्रहार करने के लिए तलवार थामे उठा हाथ और शत्रुओं के बीच से अपने घोड़े पर सवार निकलती झांसी की वीर रानी की यह छवि भारतीयों के हृदय में सदैव के लिए बस गई है।

ISBN 978-81-8482-268-7